सरस्वती गायत्री मन्त्र

ॐ सरस्वत्यै च विद्महे
ब्रह्मपुत्र्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

ॐ। हम सरस्वती को जानें।
हम सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेव की पुत्री पर ध्यान करें।
देवी हमारे पथ को आलोकित करें और हमें आत्मज्ञान प्रदान करें।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

सुनील बहिरट द्वारा लिखित परिचय

कल्पना करें, दिव्य अलंकारों से सुशोभित भगवती सरस्वती अपने हाथों में वीणा धारण किए हैं, उनके पीछे सुरम्य सरिता प्रवाहमान है। ये प्रतीक इन महादेवी के भव्य गुणों को व्यक्त करते हैं। नदी की प्रचुरता व निरन्तर प्रवाह, देवी के प्राणदायी व नवजीवन देने वाले सारतत्त्व को दर्शाते हैं। वीणा की तान और इसकी विशेष ध्वनि-तरंगे सुमधुर संगीत के स्रोत हैं। देवी रचनात्मकता को प्रेरित करती हैं। निस्सन्देह, वे इस ब्रह्माण्ड की सृजनात्मक शक्ति का एक प्रकटरूप हैं।

वर्षों पहले, मैंने एक परम्परागत भारतीय कहानी में सुना था कि समस्त विश्व को प्रकट करने हेतु ब्रह्मदेव के लिए यह आवश्यक था कि अपनी वैभवशाली सृष्टि में वे एक विधान की स्थापना करें। भगवान श्रीविष्णु और भगवान शिव से की गई उनकी प्रार्थनाएँ देवी सरस्वती के रूप में फलीभूत हुईं; देवी परम सृजनात्मक शक्ति की मूर्तरूप थीं व इसी रूप में प्रकट हुईं। वे देवी सरस्वती ही थीं

जिन्होंने ग्रहों की परिक्रमा को सुनियोजित किया, जिन्होंने रात्रि व दिवस तथा चन्द्रमा की कलाओं की रचना की, जिन्होंने सृष्टि के प्रत्येक पहलू को एक सुव्यवस्थित रूप दिया। छोटा हो या बड़ा, हमारे जीवन के हर सृजनात्मक कृत्य द्वारा देवी सरस्वती नित्य प्रकट होती हैं।

सम्पूर्ण भारत में संगीत, कला, वाणी, ज्ञान व विद्या की देवी के रूप में देवी सरस्वती का सम्मान व उनकी पूजा की जाती है। परम्परागत तौर पर संगीतज्ञ, कविजन और कलाकार किसी भी रचनात्मक कार्य का आरम्भ करने से पूर्व सरस्वती गायत्री मन्त्र को बारम्बार गाकर देवी सरस्वती के आशीर्वादों का आवाहन करते हैं। लेखक और वक्तागण इन मन्त्रों के माध्यम से देवी का सम्मान कर अपने शब्दों को परिष्कृत करते हैं व उनकी शुद्धि करते हैं, साथ ही सभी आयुवर्ग के विद्यार्थी भी अपने अध्ययन में सम्बल पाने हेतु देवी सरस्वती की उपस्थिति का आवाहन करते हैं।

सिद्धयोग पथ पर, विद्यार्थी श्रीगुरु की सिखावनियों का अध्ययन करने के लिए स्वयं को तैयार करते समय प्रायः देवी सरस्वती के आशीर्वादों का आवाहन करते हैं। सरस्वती गायत्री मन्त्र का पाठ विद्यार्थियों के मन को तैयार करता है ताकि वे विद्यार्थी जिन सिखावनियों का अध्ययन कर रहे हैं, उन पर उनका मन केन्द्रित रहे और उन्हें समझ सके।

मेरा यह सौभाग्य है कि बचपन में ही देवी माता सरस्वती की वन्दना से मेरा परिचय हुआ—मेरे स्कूल के शिक्षक हर दिन के आरम्भ में हमें माँ भगवती सरस्वती के मन्त्रों का गायन करना सिखाते। आज भी पूरे स्कूल के छोटे बच्चों द्वारा इन मन्त्रों को गाने की मधुर ध्वनि मेरे कानों में गूँजती है। हर सुबह जब हम ऐसा करते, तो मेरे अन्तर में पवित्रता व प्रशान्ति के भाव व्याप्त होते और मुझे याद है कि मन्त्र-गान के इस अभ्यास से मेरा मन सीखने के लिए तैयार होता। इन आरम्भिक स्मृतियों से मेरे अन्दर भगवती सरस्वती के प्रति कृतज्ञता का व प्रेमभरा सम्बन्ध स्थापित हुआ और समय के साथ वह सम्बन्ध और भी अधिक सशक्त व गहरा हुआ है।

यह प्राचीन मन्त्र भारत के पुरातन शास्त्र, यजुर्वेद से है। अन्य देवी-देवताओं के गायत्री मन्त्रों की ही भाँति, सरस्वती गायत्री की रचना शास्त्रीय गायत्री छन्द में की गई है जिसमें चौबीस अक्षर या बीजमन्त्र तीन पदों में रचित हैं, प्रत्येक पद में आठ भिन्न-भिन्न अक्षर होते हैं। परम्परागत तौर पर यह माना जाता है कि चौबीस में से प्रत्येक अक्षर देवी सरस्वती के एक-एक पक्ष को दर्शाता है, जिनमें शुद्धता, विवेक, प्रशान्ति व तीक्ष्ण और कुशाग्र बुद्धि सम्मिलित हैं।

वसन्त पंचमी—जो कि माघ माह में पड़ती है—के पर्व पर सरस्वती गायत्री मन्त्र का गायन करने का विशेष महत्त्व है। यह पावन दिन देवी सरस्वती के जन्म की तिथि के रूप में मनाया जाता है। भारत में उस समय लहलहाते सरसों के खेतों में सर्वत्र पीले रंग का विस्तार दिखाई देता है, और इस पर्व के दौरान सभी लोग देवी सरस्वती के सम्मान में पीले रंगों के परिधान पहनते हैं; कहा जाता है कि

पीतवर्ण देवी का प्रिय रंग है। देवी के आशीर्वादों के आवाहन हेतु सरस्वती गायत्री मन्त्र का पाठ करने के लिए प्रातःकाल में विशेष पूजाएँ आयोजित की जाती हैं।

इस मन्त्र के गायन के अपने अनुभव से मैंने सीखा है कि इस मन्त्र में वाणी की, 'वाक्' की शुद्धि करने तथा इसे उन्नत करते की शक्ति है। मैंने पाया है कि मेरे शब्द और भी सरल व स्पष्ट होते जा रहे हैं। अन्तःप्रेरणा से मुझे ज्ञात होता है कि क्या कहा जाना चाहिए। मैं यह भी पाता हूँ कि सरस्वती गायत्री मन्त्र का पाठ सुनने से मेरे मन में स्पष्टता आती है और मेरा हृदय नवस्फूर्ति व उत्साह से भर जाता है।

मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप इस मन्त्र-पाठ के अभ्यास का विकास करें ताकि आप अपने शब्दों में नवप्रेरणा ला सकें, आपका जीवन संगीत व काव्य से स्पन्दित होता रहे, और आप देवी सरस्वती के समस्त प्रचुर आशीर्वादों का आवाहन कर सकें जो इस मन्त्र के वर्णों में ही विद्यमान हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।